AMOGHVARTA

ISSN : 2583-3189

नदी संरक्षण के विविध मॉडल तथा चुनौतियाँः विदर्भ के नदियों के विशेष सन्दर्भ में

ORIGINAL ARTICLE

Author
आरती कुमारी
पीएचडी शोधार्थी
विभाग जनसंचार विभाग
महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय
वर्धा, महाराष्ट्र, भारत

शोध सार

नदी मानव जीवन तथा सभ्यता की जननी मानी जाती है। भौगोलिक रूप से नदी एक प्राकृतिक परिघटना है। विश्व के प्राचीन सभ्यताओं का उदय तथा विकास नदी घाटियों में विकसित हुई। भारत में नदियां धार्मिक सुचिता के केंद्र में रही है। भारतीय परंपरा में नदी को पूजनीय, पवित्र तथा जीवनदायिनी कहा गया है। वैदिक ग्रंथ बौद्ध तथा जैन आख्यायिकओं में नदियों का मानवीकरण किया गया. भारतीय ज्ञान परंपरा में नदी और जल संरक्षण तथा प्रबंधन के विविध उपाय बताए गए हैं। मानवीय विकास की प्रक्रिया में मानव समूहों ने नदी क्षेत्र का अतिक्रमण किया। नदियों के प्राकृतिक स्वभाव और गुणों को बाधित किया गया। तटबंध और बांध बने। नदी किनारे शहर बसे। शहरी नालों के पानी नदियों में छोड़े गए। नदियां प्रदूषित हुई। प्राकृतिक मार्ग बाधित होने से बाढ़ की समस्या खड़ी हुई। समाज और नदी के बीच टकराहट बढ़ गई, जीवनदायिनी नदी को अभिशप्त कह दिया गया। भारत देश में महाराष्ट्र राज्य में स्थित विदर्भ क्षेत्र वैनगंगा, वर्धा, पैनगंगा, पूर्णा और तापी जैसी महत्वपूर्ण नदियों से संपन्न क्षेत्र है. ये नदियाँ कृषि, जैव विविधता और स्थानीय समुदायों के लिए जीवन रेखाएँ हैं, फिर भी प्रदूषण, नदियों का अत्यधिक दोहन और बदलती जलवायु परिस्थितियों के कारण इन नदियों पर दबाव बढ़ रहा है। इस शोध पत्र में विदर्भ की नदी प्रणालियों के बारे में बताते हुए नदी संरक्षण के विविध मॉडलों का मूल्यांकन किया गया है. जिनमें पानी पंचायत और पानी फाउंडेशन के वाटर कप, जैसे सामुदायिक–आधारित दृष्टिकोणों,नदी मित्र द्वारा सामुदायिक प्रयास से लेकर जलयुक्त शिविर जैसी सरकारी योजनाओं तथा गैर सरकारी संस्था द्वारा किए जा रहे प्रयास शामिल हैं। यह अध्ययन प्रत्येक मॉडल की खूबियों और सीमाओं पर प्रकाश डालता है और विदर्भ में सतत नदी प्रबंधन के लिए एक एकीकृत ढाँचा प्रस्तुत करता है। दुनिया के कई क्षेत्र या देशों में नदी और जल संरक्षण और प्रबंधन की विविध उपाय विकसित किए गए। प्रस्तुत शोध पत्र में विदर्भ की नदियाँ तथा जल संरक्षण के विविध मॉडल पर प्रकाश डाला गया है।

मुख्य शब्द

नदी, नदी संरक्षण, विदर्भ की नदियाँ, जल संरक्षण.

परिचय

नदियाँ राष्ट्रों की जीवन रेखा हैं। दुनिया भर में लाखों लोग अपनी आजीविका के लिए नदियों पर निर्भर हैं। नदियों के किनारे बसने वाले लोग और बसी हुई बस्तियाँ इसकी गवाह हैं। नदियों का महत्व सिर्फ़ आजीविका के लिए नहीं है, बल्कि इनका सांस्कृतिक और पवित्र महत्व भी है। कई देशों में नदियों को पवित्र माना जाता है और इनका सम्मान किया जाता है।

नदियों के बिना जीवन की कल्पना करना मुश्किल है एवं इनका संरक्षण हमारे लिए बहुत महत्वपूर्ण है। नदियों के किनारे की उपजाऊ जलोढ़ मिट्टी, प्रचुर मात्रा में मिलने वाली मछलियाँ और पानी की सहज उपलब्धता ने प्राचीन काल से ही मानव को नदी किनारे बसने के लिए आकर्षित किया है। यही कारण है कि आज भी पश्चिमी अफ्रीका की सेनेगल नदी घाटी में लाखों लोग निवास करते हैं, नाइजर नदी घाटी, नील नदी घाटी में करोड़ों लोग बसे हुए हैं और भारत की गंगा घाटी में भी विशाल जनसंख्या बसती है। नदियों के महत्व को देखते हुए विश्वभर में उन्हें पवित्रता और आध्यात्मिक मूल्य प्रदान किए गए हैं (हेडा, 2006)। उदाहरण के लिए, मिस्र की नील नदी के संदर्भ में एक प्राचीन शिलालेख पर यह अंकित है कि "हे हापी (नील नदी या नदी देवता), तुम्हें नमन है। तुम इस भूमि में प्रकट होते हो और शांति के साथ आते हो ताकि मिस्र को जीवन दे सको। तुम उन खेतों को सींचते हो जिन्हें सूर्य देव' ने बनाया है। तुम सब जीव–जंतुओं को जीवन देते हो,और जब तुम स्वर्ग से उतरते हो तो बिना रुके धरती को पानी पिलाते हो (एच.ए, 1928)। "आज देश की 70 फीसदी नदियाँ प्रदूषित हैं और मरने के कगार पर है। इनमें गुजरात की अमलाखेडी, साबरमती और खारी; हरियाणा की मारकंडा; मध्य प्रदेश की खान; उत्तर प्रदेश की काली और हिंडन; आंध्र प्रदेश की मूसी, दिल्ली में यमुना और महाराष्ट्र की भीमा मिलाकर 10 नदियाँ सबसे ज्यादा प्रदूषित हैं। हालात ये है कि देश की 27 नदियाँ नदी के मानक में भी रखने लायक नहीं बची हैं। भारत में प्रदूषित नदियों के बहाव का इलाका 12,363 कि.मी. मापा गया है। इनमें से 1,145 कि.मी. का क्षेत्र पहले स्तर यानी बेहद दूषित श्रेणी का है। दिल्ली में यमुना नदी शीर्ष पर है। इसके बाद महाराष्ट्र का नंबर आता है, जहाँ 43 नदियाँ मरने की कगार पर हैं "जून–2014 में तत्कालीन पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्री प्रकाश जावड़ेकर ने लोकसभा में एक सवाल के लिखित जवाब में कहा कि कि राज्यवार प्रदूषित नदियों की सूची में पहले स्थान पर महाराष्ट्र है, जहाँ 28 नदियाँ प्रदूषित हैं (चतुर्वेदी, 2024)।

ऐसे में जरुरी है कि जल के इस स्रोत को संरक्षित किया जाए। तापी और गोदावरी बेसिन से घिरा क्षेत्र विदर्भ, महाराष्ट्र का पूर्वी क्षेत्र है जिसमें नागपुर और अमरावती दो डिवीजन हैं. भौगोलिक दृष्टि से विदर्भ दक्कन के पठार के उत्तरी भाग में स्थित है। विदर्भ की सीमा उत्तर में मध्य प्रदेश राज्य, पूर्व में छत्तीसगढ़ राज्य, पश्चिम में जलगांव और जालना जिलों और मराठवाड़ा के हिंगोली और नांदेड़ जिलों और दक्षिण में आंध्र प्रदेश राज्य से लगती है। विदर्भ महाराष्ट्र और भारत के बाकी हिस्सों की तुलना में काफी कम विकसित है। गोदावरी और तापी घाटियों में विभाजित यहाँ की नदियाँ वैनगंगा, प्राणहिता,पैनगंगा, वर्धा, इन्द्रावती है जो अधिकतर बरसाती है। यहाँ की अर्थव्यवस्था तथा उद्योग कृषि कार्य पर आधारित है. दोनों ही कार्यों के लिए जल की व्यापकता और उपलब्धता महत्वपूर्ण है। पिछले कुछ दशकों में भूजल के अत्यधिक दोहन के कारण मिट्टी में जल के अंतःस्राव की दर कम हो गई है. भूमिगत जल का स्तर गिरता जा रहा है। कई कारणों से जैसे पानी का अत्यधिक अवशोषण, नदी बेसिन में वनस्पति का विनाश, प्रदूषण, बांध, नदी में गाद जमा होना जिससे विदर्भ में नदियों की स्थिति तेजी से बिगड़ रही है। शहरों के पास की नदियाँ मर रही हैं लेकिन इनके संरक्षण के लिए कई प्रकार के मॉडल विकसित किये गये जिससे यहाँ की स्थिति में सुधार हो सके।

विदर्भ में सरकारी मॉडल द्वारा बनाए गए नदी संरक्षण मॉडल

जलयुक्त शिविर अभियान

महाराष्ट्र भारत का तीसरा सबसे बड़ा राज्य है, जहाँ गाँवों में रहने वाले लोगों की आजीविका का मुख्य स्रोत कृषि है। राज्य का लगभग 82 प्रतिशत भाग वर्षा पर निर्भर है, और इसके कई गाँव, विशेष रूप से मराठवाड़ा और विदर्भ क्षेत्रों में, अनिश्चित और अपर्याप्त वर्षा के कारण सूखाग्रस्त हैं, जिससे जीवन स्तर और कृषि पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है। महाराष्ट्र सरकार ने साल 2015 से 2019 तक महाराष्ट्र को सूखा मुक्त राज्य बनाने के लिए "जलयुक्त शिविर अभियान" परियोजना की शुरुआत की थी। इस परियोजना में नदियों को गहरा और चौड़ा करना, सीमेंट और मिट्टी के स्टॉप डैम का निर्माण, नालों पर काम करना और खेत के तालाबों की खुदाई करना शामिल था। इस योजना के तहत हर साल राज्य के 5,000 गांवों को पानी की समस्या से छुटकारा दिलाने का लक्ष्य रखा गया। राज्य आर्थिक सर्वेक्षण रिपोर्ट के अनुसार, 2015 और 2019 के बीच, इस कार्यक्रम ने अतिरिक्त जल भंडारण क्षमता का सृजन किया, जिससे 19,655 गाँव स्थायी रूप से सूखा–मुक्त हो गए। जेएसए 1.0 के तहत 22,593 गाँवों में अनुमानित 6,32,896 कार्य पूरे किए गए। 27,08,297 टीसीएम की कुल जल भंडारण क्षमता का सृजन करके, 39,04,394 हेक्टेयर भूमि को सिंचाई क्षमता प्रदान की गई, जिसके परिणामस्वरूप 20,544 गाँवों ने 100 प्रतिशत जल–पर्याप्तता प्राप्त की। इस परियोजना ने पानी से वंचित एक विशाल क्षेत्र में जल सशक्तिकरण लाने में अपनी विशालता और व्यापकता के कारण राष्ट्रीय ध्यान आकर्षित किया। भूजल स्तर को बढ़ाने और उन विशाल क्षेत्रों में सिंचाई की सुविधा के लिए एक स्थायी समाधान के रूप में, जहाँ कई दशकों से हर साल सूखा पड़ता है। इस परियोजना को राजस्थान, गुजरात और कर्नाटक में दोहराया गया।

बुलढाना पैटर्न

देश में जब भी सूखे की समस्या का उल्लेख होता है, तो लोगों के मन में महाराष्ट्र के विदर्भ क्षेत्र के किसानों की आत्महत्या की दर्दनाक याद ताजा हो जाती है लेकिन संकट के समय में नवाचार ही समाधान का रास्ता बनता है। जहां पानी की कमी के कारण कई समस्याएं उत्पन्न हो रही थीं, वहीं से एक अनोखा प्रयास ''बुलढाणा पैटर्न'' के नाम से सामने आया। इस पहल ने इस क्षेत्र की तमाम सूखी झीलों को पुनर्जीवित कर पानी संरक्षण का सफल उदाहरण प्रस्तुत किया है। ''बुलढाणा पैटर्न'' के अंतर्गत नदी और नालों को गहराई प्रदान की जाती है ताकि वर्षा का पानी ज़मीन के अंदर समाहित हो सके। इस पद्धति से भूजल स्तर में सुधार होता है और जल भंडारण क्षमता में वृद्धि होती है। महाराष्ट्र के बुलढाणा जिले में इस मॉडल को सफलतापूर्वक लागू किया गया। इससे न केवल बाढ़ की समस्या में कमी आई, बल्कि किसानों के लिए सिंचाई के साधन भी सुलभ हुए। इस पद्धति से किसानों की आत्महत्या दर में गिरावट आई और कृषि व बागवानी कार्यों में मजबूती आई है। बुलढाणा पैटर्न ने राष्ट्रीय स्तर पर अपनी अनोखी जल संरक्षण रणनीति से मान्यता पाई है। इसमें राष्ट्रीय राजमार्ग निर्माण से उत्पन्न मिट्टी का उपयोग चेक डैम और जलसंधारण संरचनाएँ बनाने में किया जाता है। इससे अतिरिक्त लागत के बिना जल भंडारण क्षमता बढ़ती है। भूजल स्तर में सुधार के साथ बाढ़ की घटनाएँ भी कम हुईं। यह मॉडल विशेष रूप से जल संकट प्रभावित क्षेत्रों में स्थायी जल आपूर्ति सुनिश्चित करने में सफल रहा है। केंद्रीय मंत्री नितिन गडकरी ने पूरे भारत में, खासकर उन क्षेत्रों में जहाँ जल संकट गंभीर है, बुलढाणा पैटर्न को अपनाने पर जोर दिया।

इस मॉडल की आसान प्रक्रिया और दीर्घकालिक सकारात्मक प्रभाव ने इसे देश के अन्य जल संकट से प्रभावित क्षेत्रों के लिए एक व्यवहारिक और प्रभावी समाधान बना दिया। आज बुलढाणा जिले में 491 किलोमीटर सड़कों के निर्माण के दौरान चलाए गए 12 प्रोजेक्ट से 550 टीसीएम सतही पानी संग्रहित किया गया है। इससे लगभग 152 गाँवों की पानी की समस्या पूरी तरह से हल हो गई है। इन प्रोजेक्ट्स के चलते 22,800 कुएँ रिचार्ज हो गए हैं, जो अब 8 से 10 महीने तक पानी से भरे रहते हैं। इसके परिणामस्वरूप 1525 हेक्टेयर क्षेत्र में लगातार फसल उगाई जा रही है साथ ही 5000 हेक्टेयर भूमि इस पानी से लाभान्वित हो चुकी है।

तामसवाड़ा पैटर्न / मॉडल

विदर्भ के वर्धा जिले में बाढ़ के पानी के कारण धाम नदी और मोती नाला क्षेत्र में कृषि को भारी नुकसान से बचाने के लिए तामसवाड़ा पैटर्न की शुरुआत की गयी. इस पैटर्न में नाले को गहरा और चौड़ा करने से नदी का प्राकृतिक प्रवाह पुनः बहाल हुआ। इस पहल के परिणामस्वरूप धाम नदी के 200 मीटर हिस्से से कुल 16,233 घन मीटर गाद निकाली गई और नदी की 26 किलोमीटर लंबाई में जल संरक्षण कार्य पूरा किया गया। इस कार्य के परिणामस्वरूप नहर में जल भंडारण क्षमता बढ़ा और इससे आसपास के क्षेत्रों में कृषि सिंचाई को लाभ हुआ है. इस सफल मॉडल ने वर्धा जिले में पर्यावरण संरक्षण व स्थायी जल प्रबंधन में एक प्रभावशाली उदाहरण प्रस्तुत किया। वर्तमान में यह परियोजना प्रतिवर्ष लगभग 280 घन मिलीलीटर जल संचित कर रही है। इससे करीब 600 एकड़ कृषि भूमि को पर्याप्त जल उपलब्ध हो रहा है और जल उपलब्धता के कारण कृषि कार्यों के साथ–साथ अन्य सहायक गतिविधियाँ भी संपन्न हो रही हैं। इस प्रकार यह परियोजना क्षेत्रीय कृषि विकास और सतत जल प्रबंधन में महत्वपूर्ण योगदान दे रही है। वर्धा जिले में धाम नदी और मोती नाला पर किए गए जल संरक्षण कार्य से 2,000 हेक्टेयर कृषि भूमि में सिंचाई संभव हुई और 6 गाँवों को पीने का पानी उपलब्ध कराया गया। इस प्रकल्प के कारण क्षेत्र में 23 करोड़ लीटर जल संचयन की क्षमता बढ़ी अंततः इस प्रकल्प की उपलब्धि यह है कि यहाँ के परिवारों का मासिक आय रु. 4900 से बढ़कर 17217 तक पहुँच गयी है जो परियोजना–पूर्व परिदृश्य की तुलना में लगभग 250ः अधिक है। रोज़गार के अवसरों में वृद्धि और भूमि मूल्यांकन में वृद्धि के कारण प्रवास में भी कमी आई है। उनका यह प्रयास गाँव के आर्थिक विकास में भी सहायक सिध्द हुआ है। तामसवाड़ा पैटर्न के कार्यों की सराहना करते हुए वर्ष 2020 में पूर्ति सिंचन कल्याणकारी संस्था को उत्कृष्ट स्वयंसेवी संस्था के रूप में ऊर्जा एवं पर्यावरण प्रतिष्ठान नई दिल्ली द्वारा जागतिक पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया।

विदर्भ में स्वयंसेवी संगठनों द्वारा बनाए गए नदी संरक्षण मॉडल

पानी फाउंडेशन

पानी फाउंडेशन का मुख्य उद्देश्य वाटरशेड प्रबंधन और भूजल पुनर्भरण के बारे में ज्ञान का प्रसार करना है। पानी फाउंडेशन 2016 से सत्यमेव जयते वाटर कप प्रतियोगिता का आयोजन कर रहा है, जिसमें ग्रामीण समुदाय गर्मी और मानसून के समय लगातार 45 दिनों तक जलसंधारण व वाटरशेड प्रबंधन की तकनीकें अपनाकर एक–दूसरे से प्रतिस्पर्धा करते हैं। पानी

फाउंडेशन का प्रमुख उद्देश्य जलसंधारण और भूजल पुनर्भरण के प्रभावी उपायों के प्रति लोगों को जागरूक करना और उनका प्रशिक्षण देना है। यह एनजीओ महाराष्ट्र के क्षेत्रों को सूखे से समृद्धि में बदल रहा है। (पानी फाउंडेशन) 2016 से 2019 के बीच, सूखा–मुक्त महाराष्ट्र का लक्ष्य लेकर सत्यमेव जयते वॉटर कप नामक अपनी पहली बड़ी पहल की शुरुआत करने के बाद कुल मिलाकर, महाराष्ट्र के 76 ब्लॉकों के 6,000 से अधिक गाँवों ने इसमें भाग लिया। ग्रामवासियों ने जलग्रहण प्रबंधन की तकनीक सीखकर उसे अपने खेतों और नालों में लागू किया। इन सामूहिक प्रयासों के माध्यम से 550 अरब लीटर से अधिक पानी को संरक्षित किया गया। यह अभियान एक सामाजिक प्रयोग से विकसित होकर जल संरक्षण के क्षेत्र में एक व्यापक जन आंदोलन बन गया. महाराष्ट्र को सूखा मुक्त बनाने के उद्देश्य से फिल्म स्टार आमिर खान और उनकी पत्नी किरन राव की एनजीओ ''पानी फाउंडेशन'' लगातार काम कर रही है. फिल्म एवं टेलीविजन निर्देशक सत्यजीत भटकल इस फाउंडेशन के सीईओ हैं। (महा 17)

नाला जोड़ो अभियान

2015 और 2017 के बीच गंभीर सूखे का सामना करने के कारण, नागपुर जिले का मौदा क्षेत्र किसानों के लिए एक युद्धक्षेत्र बन गया, जिससे उनकी आजीविका छिन गई। आर्ट ऑफ लिविंग का हस्तक्षेप, जो 2017 में शुरू हुआ, 290 किलोमीटर लंबे वाटरशेड के निर्माण पर केंद्रित है, जिसका सीधा लाभ 70 से अधिक गांवों को मिलेगा।

वाटरशेड परियोजना का उद्देश्य वर्ष के जल को संग्रहीत कर भूजल स्तर को बढ़ाना है. आर्ट ऑफ लिविंग की मौदा परियोजना प्रभावशाली आंकड़े उजागर करती है। लगभग 300 किलोमीटर गाद रहित भूमि और 70 गांवों को लाभ मिलने से; इस पहल के परिणामस्वरूप फसल की उपज में 39 प्रतिशत सुधार हुआ है, किसानों की आय में 68 प्रतिशत की वृद्धि हुई है, और भूमि उपयोग में 18 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। ये आंकड़े टिकाऊ विकासलक्ष्यों के साथ परियोजना के संरेखण को उजागर करते हैं, जिसमें गरीबी को कम करना, भूख को खत्म करना औरपर्यावरणीय स्थिरता सुनिश्चित करना शामिल है.

महाराष्ट्र के नागपुर के दो जिलों में ''नाला जोड़ो अभियान'' पहल शुरू की गई। आर्ट ऑफ लिविंग की देखरेख और महाराष्ट्र सरकार के सहयोग से सभी नालों को जोड़ा गया। इसका लाभ यह है कि बाढ़ के दौरान कोई भी फसल बहकर बर्बाद नहीं होती। अब सभी नालियों में पानी आता है। 10,000 एकड़ कृषि भूमि की सिंचाई हो चुकी है और लोग दो फसलें उगा रहे हैं। हमारे उत्पादक कार्य ने देश और किसानों के लिए एक उदाहरण स्थापित किया है। आज सभी नाले भरे हुए हैं और हमारे पास सिंचाई के लिए पर्याप्त पानी है। आर्ट ऑफ लिविंग की नदी पुनरुद्धार परियोजना पूरे भारत में किसानों और ग्रामीणों के जीवन में ठोस बदलाव ला रही है।

यशोदा नदी और जलधारा पुनर्जीवन परियोजना

यशोदा नदी वर्धा जिले के प्रमुख जल स्रोतों में से एक है, जो जिले के आठ ब्लॉकों में से चार ब्लॉकों से होकर गुजरती है। आस पास की सहायक नदियों और छोटी–छोटी धाराओं सहित यह नदी लगभग 630 किलोमीटर फैली हुई है। लगभग पुरे वर्ष बहने वाली इस नदी में नदी के तल में गाद जमने के कारण वे उथली हो गई हैं, जिससे नदी का प्रवाह अब केवल मानसूनी महीनों तक ही सीमित रह गया है। इस क्षेत्र में कमलनयन जमनालाल बजाज फाउंडेशन द्वारा नदी परियोजना आरंभ करने से पहले किए गए प्रारंभिक सर्वेक्षण में यह पाया गया कि कुल कृषि योग्य भूमि का मात्र 4 प्रतिशत ही सिंचाई के अंतर्गत आता था जबकि परियोजना होने के बाद जनवरी 2017 से 20 मार्च तक यशोदा नदी के तल को गहरा और चौड़ा किया गया, जिससे उसकी लंबाई कुल 442 किलोमीटर तक पहुँच गई। इस परियोजना में कुल 153 प्रस्तावित गांवों में से 121 गांव शामिल किए गए। कार्य के दौरान नदी के तल में हर 50 मीटर की दूरी पर विशेष आकार के बक्से बनाए गए, जिनकी लंबाई 50 मीटर, गहराई 2 मीटर और निश्चित चौड़ाई थी। इस प्रक्रिया के तहत, नदी के प्रत्येक किलोमीटर में लगभग 18 से 19 ऐसे बक्से स्थापित किए गए, जिससे नदी की जल वहन क्षमता और प्रवाह बेहतर बनाया गया। इस परियोजना के सफल होने से नदी की 630 किलोमीटर लंबाई में से 442 किलोमीटर का पुनरुद्धार किया गया जिससे अब तक 143 गांवों में से 121 गांव लाभान्वित हुए हैं. क्षेत्र में जल स्तर 6 फीट तक बढ़ गया. नदियों और नालों में पानी का प्रवाह 8 से 10 महीने तक बढ़ गया।

सामुदायिक भागीदारी आधारित नदी संरक्षण

नदी संवाद कार्यक्रम

नदी संवाद कार्यक्रम विदर्भ की नदियों के संरक्षण के लिए समुदायिक भागीदारी से किए जाने वाले कार्यक्रम हैं। इस कार्यक्रम में नदी मित्र विदर्भ इकाई और संगीत सूर्य केशवराव भोसले राष्ट्रीय सांस्कृतिक परिषद् के संयुक्त तत्वावधान में वर्धा जिले में धाम नदी, पवनार में नदी संवाद कार्यक्रम आयोजित कर विदर्भ की नदियों के संरक्षण और उनके सांस्कृतिक महत्व

को स्थानीय स्तर पर समाज के लोगों को जागरूक किया जाता है। वर्धा स्थित महात्मा गाँधी अंतरर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के प्रो. ओम प्रकाश भारती द्वारा संचालित इस कार्यक्रम में लोगों को बताया जाता है कि वर्धा, वैंगंगा, पैनगंगा, धाम, नाग, यशोदा और पेंच नदियाँ विदर्भ की जीवनरेखा हैं। नदी संवाद द्वारा लोगों को नदियों की सांस्कृतिक और आर्थिक विरासत के संरक्षित करने के बारे में बताया जाता है जिससे लोग नदियों में प्रदुषण न फैलाएं लोगों को जागरूक किया जाता है कि औद्योगिक अपशिष्ट, अनुपचारित सीवेज, अवैध रेत खनन, अत्यधिक जल दोहन और वनों की कटाई न करें जिससे नदियाँ संकटग्रस्त हो रही हैं.

निष्कर्ष

महाराष्ट्र के विदर्भ क्षेत्र में वर्तमान समय में नदी और जल संरक्षण को लेकर कार्य किए जा रहे हैं, जो सामाजिक, आर्थिक और पर्यावरणीय दृष्टि से क्षेत्र का समग्र विकास सुनिश्चित कर रहे हैं। नदी संरक्षण, जल संरक्षण, नदी पुनरुद्धार से सम्बंधित सरकारी, स्वयंसेवी संस्था तथा सामुदायिक स्तर पर जनभागीदारी स्तर पर विशेष जोर दिया जा रहा है। विशेष रूप से,तामसवाड़ा पैटर्न, बुलढाणा मॉडल, सामुदायिक जल संचयन परियोजनाएँ, और गैर–सरकारी संगठनों द्वारा चलाए जा रहे प्रयास विदर्भ के ग्रामीण क्षेत्रों में क्रांतिकारी बदलाव ला रहे हैं। इन परियोजनाओं में जलयुक्त शिविर अभियान से 19,655 गाँव स्थायी रूप से सूखा–मुक्त हो गए। बुलढाना पैटर्न के अपनाने से किसानों की आत्महत्या दर में गिरावट आई और कृषि व बागवानी कार्यों में मजबूती आई है. इससे लगभग 152 गाँवों की पानी की समस्या पूरी तरह से हल हो गई है। इन प्रोजेक्ट्स के चलते 22,800 कुएँ रिचार्ज हो गए हैं, जो अब 8 से 10 महीने तक पानी से भरे रहते हैं। इसके साथ तामसवाड़ा पैटर्न की बात करें तो इस मॉडल के अपनाने से 23 करोड़ लीटर जल संचयन की क्षमता बढ़ी अंततः इस प्रकल्प की उपलब्धि यह है कि यहाँ के परिवारों का मासिक आय रु. 4900 से बढ़कर 17217 तक पहुँच गयी है। पानी फाउंडेशन संस्था द्वारा 550 अरब लीटर से अधिक पानी को संरक्षित किया गया. वहीँ नाला जोड़ो अभियान शुरू करने से बाढ़ के दौरान कोई फसल बहकर बर्बाद नहीं होती। अब सभी नालियों में पानी आता है। 10,000 एकड़ कृषि भूमि की सिंचाई हो चुकी है। यशोदा नदी और जलधारा पुनर्जीवन परियोजना के सफल होने से नदी की 630 किलोमीटर लंबाई में से 442 किलोमीटर का पुनरुद्धार हुआ जिससे अब तक 143 गांवों में से 121 गांव लाभान्वित हुए हैं। क्षेत्र में जल स्तर 6 फीट तक बढ़ गया. नदियों और नालों में पानी का प्रवाह 8 से 10 महीने तक बढ़ गया। सरकारी और गैर सरकारी योजनाओं के साथ–साथ बिना सरकारी फंड पर आधारित नदी मित्र द्वारा स्थानीय समुदायों की पहलें भी अत्यंत प्रभावी साबित हो रही हैं। सामुदायिक स्तर पर नदी मित्र द्वारा किये जा रहे प्रयास नदी संवाद का दो मुल उद्देश्य है। नदी के सांस्कृतिक मूल्यों की स्थापित करना जिससे लोग नदी के प्रति सजग हो, दूसरी छोटी नदी को बचाने के उद्देश्य से सामाजिक स्तर पर इसके द्वारा कार्य किए जा रहे हैं क्योंकि छोटी नदियां को लोग नदी नहीं मानते, उसे बचाना बहुत आवश्यक है क्योंकि छोटी नदी बड़ी नदियों की कोशिकाएं हैं जो बड़ी नदियों को पानी देती है। नदी संवाद कार्यक्रम के तहत विशेष कर छोटी नदी को बचाने की पहल की जा रही है। अंततः, यह निष्कर्ष निकलता है कि विदर्भ क्षेत्र में बहुआयामी और समन्वित दृष्टिकोण अपनाकर नदी संरक्षण के प्रति लोग सजग हो रहे हैं. तकनीकी समाधान, पारंपरिक ज्ञान, सामाजिक सहभागिता, नीति निर्माण और आर्थिक प्रोत्साहन एक साथ मिलकर कार्य करने से विदर्भ में जारी कार्य न केवल आज के लिए बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए भी स्थायी विकास की दिशा में महत्वपूर्ण उदाहरण प्रस्तुत कर रहे हैं। विदर्भ में सामान्य रूप से अन्य क्षेत्र की अपेक्षा कुछ अधिक काम हो रहा है जिससे लाभ भी मिल रहा है लेकिन केवल यही पर्याप्त नहीं लगता है। उद्योग पर पानी खर्च तब करना चाहिए जब कृषि से पानी बचने के बाद उद्योग पर पानी खर्च करना चाहिए क्योंकि उद्योग पानी का उत्पादक नहीं उपभोक्ता है। विदर्भ में भी सभी को अपने घर में कैच द रैन योजना से बारिश के पानी को रोका जाना चाहिए जो सबसे ज्यादा मध्य प्रदेश में लागू किया गया है।

सन्दर्भ सूची

1. चतुर्वेदी, पं. (2024) *मझधार में धार.* प्रवासी प्रेम पब्लिशिंग, गाजियाबाद।
2. https://www.sanskritiias.com/hindi/currentaffairs/buldhana-pattern, Accessed on 05/05/2026.
3. प्रेस इनफार्मेशन ब्यूरो. (2021, अक्तूबर 18). वर्धा जिले में धाम नदी और मोती नाले पर जल संरक्षण कार्य https://www.pib.gov.in/PressReleaseIframePage.aspx?PRID=1764811, Accessed on 15/03/2026.
4. https://cgwb.gov.in/sites/default/files/2023-06/n27_maharashtra_0.pdf. Accessed on 17/04/2026 .

5. https://www.prnewswire.com/in/news-releases/----------302136119.html. Accessed on 17/03/2026.
6. https://www.artofliving.org/in-en/revitalizing-maharashtras-rivers. Accessed on 17/03/2026.
7. https://www.bajajfoundation.org/yashoda-river-and-streams-rejuvenation-project. Accessed on 14/02/2026.
8. https://www.loksatta.com/nagpur/industrialization-rivers-vidarbha-pollution-environment-dham-river-basin-river-history-wardha-ssb-93-5243042/. Accessed on 17/02/2026.
9. https://www.mypunepulse.com/watch-what-is-buldhana-pattern-for-water-conservation/. Accessed on 15/04/2026.
10. https://www.sanskritiias.com/hindi/current-affairs/buldhana-pattern. Accessed on 15/04/2026.
11. https://cgwb.gov.in/sites/default/files/2023-06/n27_maharashtra_0.pdf. Accessed on 15/04/2026.

——==00==——